Dept. Of History R.N. College, Hajipur,

BA History (honours) History of Ancient India paper-1

गुप्तकलीन सांस्कृति

ब्राह्मण और बौद्ध धर्म का विकास-

गुप्तों काल के पूर्व मौर्य एवं मौर्योत्तर शासन काल में बौद्ध धर्म एक प्रमुख धर्म था। गुप्त सम्राट ब्राह्मण धर्म के अनुयायी थे, इस कारण ब्राह्मण धर्म के विकास में सहयोग दिया। हिन्दू धर्म का पुनर्जागरण हुआ। बौद्ध धर्म के विकास में अवरोध उत्पन्न हुआ। गुप्तकाल में ब्राह्मणों का प्रभाव अत्यधिक बढ़ा। इसकाल में देवी देवताओं की मूर्तियां बनी। इसके अतिरिक्त यह काल धार्मिक और धर्म निरपेक्ष साहित्य के लिए प्रसिद्ध है। गणित और विज्ञान के क्षेत्र में आश्चर्यजनक विकास हुआ।

जातियों का उदय-

इस काल में अनेक जातियों का आविर्भाव हुआ, वर्ण व्यवस्था प्रभावित होने लगा। विजेता आक्रन्ताओं ने अपने आप को उच्च कुल कहने लगे। नई जातियों का निर्माण होने लगा। युद्ध बंदियों व दासों को कार्य का बंटवारा किया जाने लगा व उसे जातियों में बांटने लगे। जो शारीरिक व कठोर परिश्रम का कार्य करते थे उन्हें शुद्र कहा। शुद्रों की स्थिति दियनीय थी कठोर परिश्रम के बावजूद भी इन्हें समाज में सम्मान प्राप्त नहीं था। शुद्रों के साथ छुआछूत का व्यवहार होने लगा लगा।

स्त्रियों की स्थिति -

इस काल में स्त्रियों की दशा में सुधार हुआ। वह धार्मिक अनुष्ठान में सहयोग करने एवं पवित्र कार्यों में सहभागिता निभाती थी । धार्मिक ग्रंथ पढ़ने सुनने का अधिकार था। सती प्रथा का उदाहरण सर्वप्रथम 510 ई. में एरण अभिलेख से मिलता है। साथ ही उन्हें पुर्नविवाह का भी अधिकार मिला।

धार्मिक अवस्था

गुप्तकाल में देवी देवताओं की महत्ता बढ़ गई। इन्द्र, अग्नि, व सूर्य आदि की पूजा होने लगी। इस काल धर्म के क्षेत्र में में अवतारवाद का भी विकास हुआ। ब्राम्हणों के पुनरूथान के बाद बहुत ही धार्मिक रचानाऐं लिखी गई। इस काल में रामायण महाभारत को विस्तृत किया गया। ऐसा माना जाता है कि पुराणों का भी संकलन इसी काल में किया गया। गुप्त काल में यज्ञ के बदले पूजा भक्ति और मूर्तिपूजा ने स्थान ले लिया।

गुप्तकालीन आर्थिक दशा-

गुप्तकाल में विभिन्न प्रकार के व्यवसाय एवं शिल्प का उदय हुआ। उस काल में नगरों का भी विकास हुआ, नगरों में जीवन स्तर उत्कृष्ट था। इस काल में कृषि, लोगों का मुख्य व्यवसाय था। शासन द्वारा भी इस ओर ध्यान दिया जाता था। भूमि को मूल्यवान माना जाता था, राजा भूमि का वास्तविक स्वामी होता था। भूमि को उस समय उपज के आधार पर पांच भागों में विभक्त किया गया था। कृषि से राजस्व की प्राप्ति होती थी, जो उपज का छठा भाग होता था। भूमिकर को कृषक नगद या अन्न के रूप में करता था। इस काल में मुद्रा अर्थव्यवस्था सुदृढ़ हुई हमें कई प्रकार के सिक्के मिलते हैं जो सोने-चांदी और कांसे के बने होते थे।

भूमि अनुदान-

गुप्त काल में भूमि अनुदान की प्रथा प्रारम्भ की गयी। इसके अतंर्गत राज्य की समस्त भूमि राजा की मानी जाती थी। राज्य किसानों को अस्थायी तौर पर भूमि कृषि कार्य के लिये देता था। यह राज्य के कृपापर्यन्त चलता था, परन्तु आगे चलकर भूमिकर अनुदान का स्वरूप वंशानुगत हो गया तथा इसके साथ भूमि का क्रय-विक्रय प्रारम्भ हो गया। इस व्यक्तिगत भू-स्वामित्व की प्रक्रिया का लाभ शक्तिशाली और समृद्ध व्यक्तियों ने लेना आरम्भ कर दिया। कृषक वर्ग इन ग्राम के स्वामियों मालगुजार के अधीन होते गये, इस प्रक्रिया ने सामंती प्रथा को जन्म दिया। ये सामन्त आगे चलकर जमींदार कहलाये।

व्यापार-

इस काल में व्यापार भी उन्नति की ओर था। वस्त्र व्यावसाय विकसित हो चुका था और मदुरा, बंगाल, गुजरात वस्त्रों के प्रमुख केन्द्र थे। इसके अतिरिक्त शिल्पी सोना, चांदी, कांसा, तांबा आदि से औजार बनाते थे। व्यापारियों के संगठन प्रमुख को सलाह देने हेतु एक समिति होती थी, जिसमें चार-पांच सदस्य होते थे। शासन की ओर से वणिकों और शिल्पियों पर राजकर लगाया जाता था। कर के एवज में बेगार का भी प्रचलन था। पशुपालन भी प्रमुख व्यवसाय माना जाता था। व्यापार, मिस्त्र, ईरान, अरब, जावा, सुमात्रा, चीन तथा सुदूरपूर्व बर्मा से भी होता था। रेशम के कपड़ों की मांग विदेशों में अत्यधिक थी। व्यापार को चलाने हेतु व्यापारिक संगठनों का अपना नियम कानून था।

गुप्तकाल में कला-

गुप्तकाल में मूतिर्कला का जितना विकास हुआ उतना प्राचीन भारत में किसी भी काल में नहीं हुआ। इसी प्रकार स्थापत्य एवं चित्रकला और मृण्मूर्तियों का भी विकास इस काल में देखा गया। यही वजह है कि गुप्तकाल को प्राचीन भारत का स्वर्ण काल कहते हैं।

वास्तुकला-

गुप्तकाल में वास्तुकला को भी शासन द्वारा संरक्षण मिला, इस कला में नवीन शैली देखने को मिलती है। भवन, मंदिर, राजप्रसाद जैसे स्थापत्य बनाये गये थे, उत्खनन से गुप्तयुगीन भवनों के अवशेष मिले हैं, जो उत्कृष्ट शैली के हैं। इसी प्रकार इस काल में हिन्दू धर्म के प्रचार और संरक्षण मिलने के कारण वैष्णव और शैवमत के मंदिरों का बहुतायत से निर्माण कराया गया। गुप्तकालीन मंदिरों के निर्माण में प्रौद्योगिकी और तकनीकी सम्बन्धी विशेषताएं देखने को मिलती हैं। मंदिर आकार में छोटे, किन्तु पत्थरो से बनाये जाते थे, इसमें गर्भगृह बनाया जाता था, जहां पर देवता की स्थापना की जाती थी। मंदिरों के स्तम्भ-द्वार, कलात्मक होते थे, किन्तु भीतरी भाग सादा होता था। कालान्तर में इन मंदिरों के शिखर लम्बे बनने लगे थे, इसकी पुष्टि 'बराहमिहिर' एवे 'मेघदूत' से भी होती है, इन मंदिरों में छत्तीसगढ़ के सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर, तिगवा(जबलपुर) का विष्णु मंदिर, भूमरा (नागौद) का शिव मंदिर, देवगढ़ का दशावतार मंदिर, उदयगिरि (विदिशा) का विष्णु मंदिर, एरन का बराह और विष्णु मंदिर, कानपुर के निकट भीरत गॉव का मंदिर प्रमुख हैं।

मूर्तिकला -

गुप्त युग में हिन्दू, जैन, बौद्ध धर्म से सम्बन्धित ससुज्जित व कलात्मक मूर्तियां बड़े पैमाने पर बनीं। इन मूर्तियों की सादगी, जीवंतता व भावपूर्ण मुद्रा लोगों के आकर्षण का केन्द्र है। मथुरा, सारनाथ और पाटलिपुत्र मुर्तिकला के प्रमुख केन्द्र थे। मूर्तियों में प्रभामण्डल अलंकरित होती थी तथा केश घुँघराले बनाये गये साथ ही परिधान पारदर्शक होते थे ।

चित्रकला-

काल में चित्रकला का भी विकास महत्वपूर्ण है चित्रकला वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित थी। अजंता की चित्रकला सर्वोत्तम मानी गयी है। आकृति और विविध रंगों के संयोजनों ने इसे और भी आकर्षक बना दिया है। चित्रकला में मौलिक कल्पना, रंगों का चयन और सजीवता महत्वपूर्ण है। इन चित्रों में प्रमुख रूप से अवलोकितेश्वर, मूर्छित रानी, यशोधरा राहुल मिलन, छतों के स्तम्भ खिड़की और चौखटों के अलंकरण चित्रकला के प्रमुख उदाहरण है। बाघ की गुफाओं के भित्तिचित्र को भी गुप्तकालीन माना गया है, इन चित्रों में केश-विन्यास, परिधान व आभूषण आकर्षण के केन्द्र माने जाते हैं।

संगीत-

गुप्तकाल में नृत्य व संगीत को भी कला का एक अंग स्वीकार किया गया। समुद्रगुप्त को संगीत में वीणा का आचार्य माना जाता है । वात्स्यायन ने संगीत की शिक्षा को नागरिकों के लिए आवश्यक माना है। मालविकाग्निमित्रम् से ज्ञात होता है कि नगरों में संगीत

की शिक्षा हेतु भवन बनाये जाते थे, उच्च कुल की कन्याएं नृत्य एवं संगीत की शिक्षा अनिवार्य रूप से लेती थीं।

गुप्तकाल में विज्ञान और प्रौद्योगिकी

गुप्तकाल में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का ज्ञान इतना उन्नत था। इस काल में आर्यभट्ट, बराहमिहिर और ब्रह्मगुप्त सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक हुये। आर्यभट्ट ज्योतिष और गणित के आचार्य थे। इनके द्वारा प्रतिपादित गणितीय सिद्धांत का आगे चलकर विकास हुआ। गुप्तकाल में गणित, खगोलशास्त्र ज्योतिष और धातुकला के क्षेत्र में बहुत प्रगति हुई। माना जाता है कि गुप्तकाल में ही दशमलव पद्धति और शून्य का अविष्कार हुआ। क्रमांक 1-9 तक के अंकों के स्थानीय मान भी निर्धारित किया। आर्यभट्ट ने गणित की समस्या को सुलझाने के लिए आर्यभट्टीय नामक ग्रंथ लिखा। चरक और सुश्रुत संहिता का संक्षिप्त विवेचन किया गया। इस काल में धातु कला का भी पर्याप्त विकास हुआ। दिल्ली के समीप महरौली में लाहै स्तम्भ इसका उदाहरण है साढ़े छः टन वजनी 7.38 मीटर ऊँचा लौह स्तम्भ है,

साहित्य का विकास

गुप्त काल को संस्कृत साहित्य का स्वर्ण युग माना जाता है। गुप्त काल को श्रेष्ठ कवियों का काल माना जाता है। इस काल के कवि को दो भागों में बांटा गया है,- प्रथम वे कवि आते है जिनके विषय में हमें अभिलेखों से जानकारी मिलती है इस श्रेणी में हरिषेण, जिसने प्रयाग प्रशस्ति की रचना की तथा वीरसेन किसने उदयगिरी गुफा लेख की रचना की वत्सभट्टि (मंदसौर के स्तम्भ लेख) और वासुल (मंदसौर प्रशस्ति) आते हैं। द्वितीय श्रेणी में वे कवि आते हैं जिनकी रचनाओं के बारे में हमें ज्ञान हैं, जैसे -कालिदास, भारवि, भट्टि, मातृगुप्त, भर्तृश्रेष्ठ तथा विष्णुशर्मा आदि। कालिदास संस्कृत साहित्य के इस महान् कवि की महत्त्वपूर्ण कृतियां हैं- ऋतुसंहार, मेघदूत, कुमारसंभव एवं रघुवंश महाकाव्य। कालिदास की सर्वोत्कृष्ट कृति उनका नाटक अभिज्ञान शाकुन्तलम् है। इसके अतिरिक्त उन्होंने मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम् नाटक की भी रचना की है। भारवि द्वारारचित महाकाव्य किरातार्जुनीयम्‘ है। भट्टी के द्वारा रचित भट्टिकाव्य है।